अलगाना/ और भी मुश्किल ('मुश्किल',17)। गुजराती साहित्य में एक आयातित विधा 'मोनो इमेज' इतनी प्रचलित हुई है कि अब इस विधा की पत्रिकाएँ भी प्रकाशित हो रही हैं और पुस्तकें भी। मोनो इमेज में एक ही विषय पर 5-7 छोटी-छोटी कविताएँ लिखी जाती हैं जो भिन्न-भिन्न शब्दचित्र उपस्थित करती हैं। संग्रह में इस श्रेणी की जो कविताएँ हैं वे विशिष्ट हैं फिर वह 'रविवार' हो या 'आँधियाँ', 'प्यार एक स्मृति है' हो या 'राग-विराग' या कि 'कल्प-विकल्प'। इन कविताओं का विषय भले ही एक हो परंतु कवि ने हर कविता में अपना एक अलग रंग भरा है और उन्हें मोनोटोनस होने से बचा लिया है। कहने को तो वह एक रविवार है और घर है परंतु उसका अर्थ माँ, पिता, पति, पत्नी और बच्चों के लिए कितना अलग-अलग होता है जहाँ बच्चे पिता के साथ धमाचौकड़ी करते हुए एक-दूसरे पर तकिये फेंकते हैं और 'हफ्ते में दो बार/ क्यों नहीं आता रविवार/ सोचते हैं बच्चे तो एक माँ भी है जो कहने को कह तो देती है अरे टूट जाएगी रूई/ मैली हो जाएगी खोली.....आप भी इन बच्चों में... पर कहीं अंदर से खुद की इच्छा को दबाती/ कि एक तकिया उठाके जोर से/ मार दे बच्चों के पापा के सर पर/ वह भी(55) तो दूसरे दृश्य में बच्चे उदास हैं/ पापा को जाना है बाहर/ अबके रविवार (57), तो कोई रविवार ऐसा भी है कि जिसका माई करती है इंतजार/ बड़े धीरज के साथ/ लग ही जाएगी इस बार शायद/ चश्मे की टूटी डंडी/ ईसबगोल और बाय का तैल बेअसर हुआ है और माई को स्कूटर पर बैठकर बेटे के साथ गंगा-भायली के घर भी तो जाना है जो पूरे चार बरस बाद गाँव से अपने बेटे के पास आई है(58)। ये पन्नों पर उतरे मात्र कुछ शब्द भर नहीं हैं जिन्हें हम कविता कहकर छुट्टी पा लें, यह एक ऐसी वास्तविकता है जिसका सामना आज बहुतायत से माँएँ कर रही है। कवि की कलम से- सर्दी-गर्मी-आँधी-बरसात, हारी-बीमारी में भी मुँह-अँधेरे काम पर निकले उन कर्मयोगियों के घर का वह रविवार भी नहीं छूटता जिसका आना किसी अपशकुन-सा होता है कि गर पिता न जाए काम पर तो, बैठ जाए चूल्हा/ मिट्टी का मूसलाधार में (59)

संग्रह की छोटी कविताएँ बहुत प्रभावशाली हैं, कहा जा सकता है एकदम 'टेलिग्राफिक इफेक्ट' वाली, अब भले ही डाक विभाग से यह तार वाला विभाग खत्म कर दिया गया हो परंतु हमारी पीढ़ी घर में तार आने के महत्त्व को खूब समझती है और इसलिए भी कि इन कविताओं में जो 'अनकहा' है वह किसी कहे-सा मुखर है।

> ट्रेन पकड़ने के लिए दौड़ता कवि पहुँच जाता है प्रति वर्ष वैशाख पूर्णमासी को लगने वाले कल्याणजी के मेले में, यहाँ का जो वर्णन है वह हर उस मेले का आँखों देखा हाल है जिसे हम सबने महसूस किया है। सात पेज लंबी यह कविता इतनी पिक्चरस्क है कि कवि जहाँ–जहाँ से गुजरता है हम भी उसके मूक दर्शक होते जाते हैं।

बहुतायत में लिखी छोटी कविताएँ बड़ी कोमल, बड़ी सहज और मन को भा जाने वाली हैं। इन कविताओं का कथ्य निश्चित ही आम तौर पर लिखी, छपी जाने वाली कविताओं से सर्वथा भिन्न है और यह भिन्नता ही इस संग्रह को विशिष्ट बनाती है, बानगी के तौर पर देखिए 'बचा रह गया नमक'- सनसनाते शब्दों से उछलकर/ छलक पड़े आँसू/ ये अच्छा ही हुआ ना !/ अंदर अगर रह जाते/ तो रेतते रहते/ कलेजा देर तक।/ अब देखो तो किस तरह/ बातों-बातों में हवा/ उड़ा ले गई इनको/ बचा रह गया नमक/ वह अपने हिस्से का (23)। अपने हिस्से का बचा रह गया यह नमक भी क्या रहीम के किसी पानी से कम है भला। 'वह सबका प्रभु' और 'उसका पता' कुरआन की आयतों का भावांतरण है जो एक अभिनंदनीय प्रयोग है। संग्रह में 'लंबी कविता' शीर्षक से एक लंबी कविता है जिसका उल्लेख विशेष रूप से इसलिए कर रही हूँ कि इस तरह की कविता कम ही देखी जाती है। यह एक लंबा दुःस्वप्न है जिसमें चीखती धड़धड़ाती आती ट्रेन में कवि अपनी पत्नी को एक बड़े बक्से, दो सूटकेस, प्लास्टिक के कट्टे, बंद बिस्तर, तीन बड़े थैलों के साथ ठूंस तो देता है पर केतली में पानी भरने के चक्कर में खुद ट्रेन नहीं पकड़ पाता क्योंकि शुक्र है एक बुढ़िया को उसने गिरने से बचा लिया।

ट्रेन पकड़ने के लिए दौड़ता कवि पहुँच जाता है प्रति वर्ष वैशाख पूर्णमासी को लगने वाले कल्याणजी के मेले में, यहाँ का जो वर्णन है वह हर उस मेले का आँखों देखा हाल है जिसे हम सबने महसूस किया है। सात पेज लंबी यह कविता इतनी पिक्चरस्क है कि कवि जहाँ-जहाँ से गुजरता है हम भी उसके मूक दर्शक होते जाते हैं। 'झाबझोब', 'हुमक-हुमक' 'खुखेरना' जैसे शब्दों से पहली बार हुआ साक्षात्कार अच्छा लगा और अच्छा लगा प्लास्टिक की बंद बोतलों में पानी पीने के चक्कर में हम जिसे बहुत पीछे छोड़ आए उस 'रामझारा' को याद करना। एक बहुत अच्छे कविता संग्रह के लिए इंदुशेखर 'तत्पुरुष' का हार्दिक अभिनंदन। 'पीठ पर आँख' का मुखपृष्ठ भी उनकी सादगी का परिचायक है। बोधि प्रकाशन का भी अभिनन्दन इस आग्रह के साथ कि अपने अगले प्रकाशनों में वे चंद्रबिंदु उपयोग अवश्य करें। 'माँ', 'आँसू', जैसे सारे शब्दों का सौंदर्य चंद्रबिंदु के बिना अधूरा है। 1996 में प्रकाशित 'खिली धूप में बारिश' के बाद एक लंबे अंतराल से 'पीठ पर आँख' का प्रकाशन हुआ है, आशा करते हैं कि इंदुशेखर जी का अगला काव्य-संग्रह जल्दी प्रकाशित होगा। ■